

पेरिस - १८ मार्च १९८२ -

प्रिय राम -

मेरा सीकला एक एक सफेद कागज था। इसकी सफेदी इतनी कुदर भरी थी बेकार लगा कि उसे अपने रव्यालातों से गंदा करूं।

तुम्हारे वक्त का इन्तजार रहा है। भावना हुआ था कि 'गात गवन' के उद्घाटन में तुम भागल गये थे। उम्मीद थी कि तुम लगाचार दोगे। मेरी गसरुफियत यहाँ कुछ ऐसी रही है कि मैं न आ सका। इसका क्या आफसोस है। म० प्र० के लिये वह चटना बहुत गहनवर्ण थी। आगे (वक्त) मिलती रही है, पर तुम्हारे (कुछ) के विचारों को जानने की इच्छा थी। रुपका संग्रह कैसा है, आधिकारियों की कला कृतियाँ, यह क्या ग्राजियम और सब मित्रों के साथ भागल में मिलना एक नई अनुभूति ही होगी।

आप से विशेष प्रवेश में है और आशा है क्या रहेंगे। अब तो कुछ कहने वाले, तामोश हो गये होंगे ?

और भाव सको गे 'दिल्ली प्रियागात्र' के बारे में जो १५ मार्च को शुरू होने वाला था। रिचर्ड के इसरा से ही मैंने दो नये और काफी बड़े चित्र गिताये थे - २६ फरवरी को, हवाई अड्डा से। अभी तक, पता नहीं कि वे हाथ पर आये या नहीं। आफसोस है, कि देश में हर गामुली कार्य एक जटिल समस्या बन जाती है।

हमारे वास्तवता की इद नहीं। इस साल चित्र कम हैं निगत्रण अधिक। दिल्ली के बाद स्ट्राकडोग, सत्रों द मे, प्रीवा, फिर एक एकव अनेकल मे, एकल प्रदर्शनी बर्न में अप्रैल। गानिन आसलो में अप्रैल मे। नार्वे से भी गोंग काफी हैं। शायद अब जिन्दगी शुरू हो रही है। पर फिलहाल इद कर काम करना है।

फ्रान्स में कठिनाइयाँ बहुत हैं। सोशियलिस्ट सरकार के साथ

सभी को जो यहां रहते हैं। (तजाना) (वाली है), फेन्क वाग़गोए है
अज़ूदर, किसान और श्रमाग को जिन्दगी की बढ़ती हुई कीमतों
से और भी बेचेगी। फिर भी ये कहवाइयाँ केवल इस मुल्क की ही
नाहीं। सारे दुनियाँ में आज दहई हुई है। कला लोगों के लिये बड़े
बड़े प्रोग्राम बनाए जा रहे हैं, और कला बाज़ार की हालत इतनी
बराबर कभी न थी। हो सकता है कि एक दिन आयेगा कि पूर्व देशों
की तरह चित्रकारों को भी माहवारी तनवाइ मिलेगी ताकि वे
जिन्दा रह सकें, पर डर यही है कि हमने राजनीति और से दूसरी
शक्ति साथ आती है।

फिलहाल यही देखना है कि कल फ्रांसीसी किस तरह
वोए देंगे।

अच्छा हा जी, इतनी जल्द खारी। अब अपना सगाया दें।
और भोगाल बरवई और दिल्ली का। यह भी बताना कि यहाँ
हो चित्र तुरहे कैसे लगे? और क्या वे समय पर पाँच सारे?
कैसे हो। क्या प्रोग्राम है, लन्दन और ओक्सफोर्ड में चित्र
मेज रहे हो?

तुरहे, किसानों को बहुत याद और स्नेह है।

रजा